विनोबा भावे विश्वविद्यालय

हजारीबाग (झारखण्ड)

पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) – 2020

स्नातक हिंदी रुचि आधारित साख पद्धति (CBCS)

स्नातक पाठ्यक्रम–साख रूपरेखा (CCFUP)

पाठ्यक्रम के विषय में

प्रस्तावना –

सा विद्या या विमुक्तये

– विष्णुपुराण

झड़ गए पंख, विषदंत झड़े,
पशुता का झड़ना बाकी है ।
ऊपर–ऊपर तन संवर गये,
मन का संवरना बाकी है ।

– दिनकर

प्रस्तुत पाठ्यक्रम प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार किया गया है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य है। इसी को ध्यान में रखकर एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

भाषा का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है – बोलचाल तथा लिखित रूप में। बोलचाल की भाषा का मतलब दैनिक प्रयोग की भाषा से है। इसमें व्यक्तिगत रचनात्मकता का अभाव होता है। यह सामाजिक रचनात्मकता द्वारा निर्मित होती है। इस कारण इसमें सामाजिक–सांस्कृतिक रिश्तों की प्रगाढ़ता होती है। लिखित भाषा, बोल–चाल की भाषा से थोड़ी भिन्न होती है। मौखिक भाषा जब लिखित रूप में प्रयुक्त होती है तब गंभीर हो जाती है, विषय के अनुरूप उसमें परिवर्तन हो जाता है।

अधिगम परिणाम (व्यावहारिक ज्ञान) –

लिखित भाषा का प्रयोग केवल साहित्य के लिए ही नहीं होता। कार्यालय, शास्त्र, विज्ञान, कला, संचार आदि के लिए भी इसका प्रयोग अपेक्षित है। कार्यालय, विज्ञान, शास्त्र, संचार आदि की भाषा से साहित्य की भाषा भिन्न होती है। साहित्येतर विषयों की भाषा ज्यादा वैचारिक, विश्लेषणात्मक तथा सूचनात्मक होती है। इसमें मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों की दरकार नहीं होती, किन्तु साहित्यिक भाषा में मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों के साथ–साथ ज्ञान का विशाल भंडार होता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रधान शिक्षा के इस युग में जहाँ मानवीय संवेदनाएँ मरती जा रही हैं, मानव मूल्य विनष्ट होते जा रहे हैं, वहीं बोलचाल की हिंदी और साहित्य की भाषा हिंदी अपने हजार–हजार हाथों से विश्व मानव मूल्यों के टूटन को, मरती हुई संवेदना को रोक रखती है तथा मानव के सर्वांगीण विकास में अहम् भूमिका निभाती है।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड की हिंदी पाठ्यक्रम समिति ने **NEP-2020** को रूचि केन्द्रित सेमेस्टर पद्धति पर आधारित चार वर्षीय स्नातक कक्षाओं के लिए अपने पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय आत्मा की धरोहर, मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं से परिपूर्ण ऐसी ही हिंदी भाषा एवं साहित्य के महत्वपूर्ण संदर्भों एवं हिस्सों को निर्धारित किया है।

पाठ्य–कार्यक्रम का अधिगम परिणाम –

स्नातक पाठ्यक्रम के विभिन्न सेमेस्टरों के लिए एक ओर जहाँ हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न खंडों को रखा गया है, वहीं उस काल खंड के महान कवियों, लेखकों एवं उनके महत्त्वपूर्ण कृतियों को भी स्थान दिया गया है। लघु पाठ्यक्रम (MINOR DISCIPLINE) के अंतर्गत विषय संबंधी ज्ञान, आधुनिक भारतीय भाषा (अनिवार्य) हिंदी (MIL), अहिंदी (NON-HINDI) तथा संप्रेषण कौशल (COMMUNICATION SKILLS) के पाठ्यक्रम में भी हिंदी साहित्य की महान विभूतियों की विविध विधाओं की महत्वपूर्ण रचनाओं को रखा गया है। संप्रेषण कौशल से सम्बद्ध पाठ्यक्रम में निबंध, भाषा, व्याकरण, पत्रकारिता के भी कुछ हिस्सों को अनिवार्य बनाया गया है। ये सब मिलकर स्नातक पाठ्यक्रम–साख रूप रेखा (CCFUP) के उद्देश्यों को पूर्ण करते हैं।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया –

प्रत्येक भाषा–साहित्य एवं देश का अपना इतिहास होता है। यह अनेक कालखंडों में विभाजित होता है। प्रत्येक कालखंड की अलग–अलग, अपनी–अपनी परिस्थितियाँ होती है। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आंतरिक एवं बाह्य परिवेश होते हैं। इतिहास का अध्ययन इन्हीं प्राचीन भाषा, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति आदि को जानने के लिए आवश्यक होता है, वहीं सृजनात्मक साहित्य मानवमूल्यों में अभिवृद्धि कर व्यक्ति को संवेदनशील बनाकर, उसमें भाषिक दक्षता प्रदान करता है : सौन्दर्यबोध उत्पन्न करता है तथा देश की कामकाजी व्यवस्था के अनुकूल बनाता है। हिंदी आज न सिर्फ राष्ट्रीय गुणवत्ता और संस्कार–संस्कृति की भाषा है वरन विश्वग्राम की एक महती रोजगारोन्मुख भाषा है जिसे जानने, समझने और अपनाने वालों की संख्या वैश्विक स्तर पर अव्वल है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रक्रियाओं को समाहित किया जाएगा–

वाद–विवाद
प्रश्नोत्तरी
संसदीय प्रणाली
वक्तृत्व व लेखन कौशल विकास के विविध आयामों के उपयोग।

हिंदी पाठ्यक्रम समिति,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग (झारखण्ड)

प्रथम समसत्र (First Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'ख'	–	03 X 15 = 45 अंक
कुल	–	50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय)	–	02 X 05 = 10 अंक
खंड 'ख'	–	04 X 15 = 60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा	–	15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति	–	10 अंक
	कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

ए.ई.सी., एम.आई.एल. (ABILITY ENHANCEMENT COURSES, MIL) 01 : लेखन कौशल

प्रथम समसत्र अथवा द्वितीय समसत्र

कोड – AEC – 1 & AEC – 2 अंक – 50

क्रेडिट – 02 समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - लेखन कौशल–लेखन–अर्थ, विशेषताएं, महत्व एवं प्रकार, मीडिया लेखन (समाचार, सम्पादकीय, फीचर, संपादक के नाम पत्र आदि), संवाद लेखन, जीवन वृत्त (बायोडाटा) – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - प्रयोजनमूलक हिंदी–सामान्य परिचय
टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, ज्ञापन, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना
- संचार माध्यम लेखन – गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रमुख (MAJOR) प्रथम–पत्र – 01. हिंदी साहित्य : आदिकाल से पूर्व मध्यकाल – रचनाएँ व इतिहास

कोड – MJ - 1 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी 11वीं शताब्दी से लेकर मध्यकाल के पूर्वार्द्ध तक के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संदर्भों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- हिंदी साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे ।
- हिंदी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे ।
- हिंदी के भावगत, भाषागत और शैलीगत विकास से परिचित हो सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण। – 01 क्रेडिट
आदिकाल का नामकरण।

इकाई 2 – आदिकालीन साहित्य–पृष्ठभूमि और प्रवृतियाँ।
रासो काव्य परंपरा।
जैन साहित्य, सिद्ध एवं नाथ साहित्य। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – भक्तिकाल के उद्‌भव की पृष्ठभूमि।
भक्ति काव्य और उसका वर्गीकरण। – 01 क्रेडिट
निर्गुण भक्ति काव्य।
सगुण भक्ति काव्य।

इकाई 4 – **कवि परिचय एवं रचनाएं –**

पृथ्वीराज रासो –'कनवज्ज समय' के अंतर्गत षडऋतु वर्णन, जायसी, विद्यापति–वंदना,राधा की वंदना, कबीरदास–साखी, रैदास–प्रभु जी तुम चंदन, नानक देव–जो नर दुख में दुख नहीं मानै, तुलसीदास–कवितावली के पद, मीराबाई–मीरा के पद (पद संख्या 1 से 04), सूरदास–भ्रमरगीत–सार (पद संख्या 21 से 25) जायसी – नागमती वियोग खंड – 01 क्रेडिट

अनुशंसित ग्रंथ : हिंदी विभा (भाग – 1) – डॉ0 कृष्ण कुमार गुप्ता, जयभारती प्रकाशन, प्रयागराज

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल
- आदिकाल की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी
- मध्यकालीन काव्य चिंतन और संवेदना, डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय।
- कबीर की विचारधारा, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत ।
- विद्यापति, डॉ. शिवप्रसाद सिंह।
- जायसी, डॉ. विजयदेव नारायण साही।
- सूर और उनका साहित्य, डॉ. हरवंशलाल शर्मा।
- मध्यकालीन काव्य वैभव, डॉ. शीतला प्रसाद दुबे।
- तुलसी काव्य मीमांसा, डॉ. उदयभानु सिंह।
- कबीर का रहस्यवाद, डॉ. राजकुमार वर्मा।
- तुलसी और उनका युग, डॉ. राजपति दीक्षित।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कृष्ण काव्य : स्वरूप और सीमाएँ, डॉ. सुबोध कुमार सिंह, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ. केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

लघु पत्र (MINOR) – 01. आधुनिक गद्य साहित्य

कोड – MN – 1A | अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 | समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में संवाद –कला एवं वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- कथा–साहित्य व निबंध के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1	हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकास ।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2	हिंदी उपन्यास का उद्‌भव और विकास ।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3	हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास ।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 4	हिंदी गद्य विधाओं का उद्‌भव और विकास : जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र।	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी नाटक उद्‌भव और विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस
- हिंदी निबंध, प्रभाकर माचवे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (भाग – 2), गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ. केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

द्वितीय – समसत्र (Second Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

5. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
6. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
7. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
8. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'ख'	–	03 X 15 = 45 अंक
कुल	–	50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

6. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
7. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
8. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
9. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
10. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय)	–	02 X 05 = 10 अंक
खंड 'ख'	–	04 X 15 = 60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा	–	15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति	–	10 अंक
	कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) द्वितीय–पत्र – 02. हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल – रचनाएँ व इतिहास

कोड – MJ - 2 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भारतवर्ष की 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य आदि का ज्ञान होगा ।
- इस काल के साहित्यकार और उनकी रचनाओं से वे परिचित हो सकेंगे ।
- इस काल के साहित्य का भावात्मक और राजसत्तात्मक प्रभाव का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- इससे सृजन के काव्य रूप का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- इससे साहित्य सृजन के आधार हिंदी भाषा और मौलिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 रीतिकाल के नामकरण की समस्याएँ।
रीतिकालीन परिस्थितियाँ और पृष्ठभूमि। – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 रीतिकालीन काव्य भाषा एवं गद्य साहित्य। – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ : रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त और वीरकाव्य। – 01 क्रेडिट

इकाई – 4 (बिहारी–सतसई के दोहे (पद संख्या 1 से 10, जगन्नाथ दास रत्नाकर के क्रमानुसार), मतिराम–कुंदन को रंग,क्यों इन आंखिन,
सेनापति–सारंग धुनि सुनावै,देखत न पीछै कौं भूषण–इंद्र जिमि जंभ,
भुज भुजगेस की,साजि चतुरंग बीर रंग में,घनानंद–कवित्त,
पद संख्या 1 से 5 विश्वनाथ मिश्र के क्रमानुसार) –01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी में श्रृंगार परम्परा और महाकवि बिहारी –डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त।
- बिहारी का नवमूल्यांकन – डॉ. बच्चन सिंह।
- देव और बिहारी – कृष्ण बिहारी मिश्र।
- बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।
- घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहरलाल गौड़।
- भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन – भगवानदास तिवारी।
- भूषण – राजमल बोरा।
- रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन – राजकुमार वर्मा।
- रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेंद्र ।
- हिन्दी विभा – डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता
- स्वर्ण मंजूषा – सं0 नलिनविलोचन शर्मा एवं केसरी कुमार
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ. केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

कोड – MJ - 3 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- इस पाठ के तीन खंड होंगे–भारतेंदु युगीन कविता,द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता–इस प्रकार 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ पूर्व से ही इस पाठ में विद्यार्थियों को कविता के स्वरूप का ज्ञान होगा। छायावादी कविता के काल तक आते–आते कविता की भाषा–शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकेंगे ।
- भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे ।
- तत्कालीन राजनीति, सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपांतरण के बारे में जान सकेंगे।
- राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे ।
- ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से परिचित हो सकेंगे ।
- छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे ।
- आख्यानों की आधुनिकता से अवगत होंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

भारतेंदु युग (नवजागरण काल / आधुनिक काल)।

इकाई – 1 आधुनिकता : अवधारण एवं स्वरूप।
भारतेंदु युगीन परिवेश : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश।
– 01 क्रेडिट

इकाई – 2 भारतेंदु युगीन कवि : भारतेंदु हरिश्चन्द्र– गंगा छवि वर्णन, प्रतापनारायण मिश्र–गौ महिमा।
द्विवेदीयुग – जागरण–सुधार काल। – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : राष्ट्रीयता, मानवता, नीति और आदर्श, वर्ण्य विषयों में विविधता और क्षेत्र विस्तार, हास्य–व्यंग्य संबंधी काव्य, विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग, छंद वैविध्य, भाषा सौष्ठव आदि। द्विवेदीयुगीन कवि – श्रीधर पाठक – काश्मीर सुषमा, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – कर्मवीर, मैथिलीशरण गुप्त – मनुष्यता – 01 क्रेडिट

छायावाद काल – पृष्ठभूमि, नामकरण, प्रवृत्तियाँ एवं छायावादी कवियों की काव्यगत विशेषताएँ

इकाई – 4 जयशंकर प्रसाद – किरण
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – तोड़ती पत्थर
सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि
महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुख की बदली – 01 क्रेडिट

अनुशंसित ग्रंथ : काव्य सरगम – सं. संतोष कुमार चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

सहायक ग्रंथ –

- छायावाद का पतन, देवराज उपध्याय।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, डॉ. रामविलास शर्मा।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण, डॉ. रामविलास शर्मा।
- नवजागरण की समस्याएं, डॉ. रामविलास शर्मा ।
- छायावाद की प्रासंगिकता, रमेशचंद्र शाह।
- द्विवेदीयुगीन छायावादी काव्य, डॉ0 सुनील कुमार दुबे, आयुष्मान, नई दिल्ली।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ. केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

तृतीय समसत्र (Third Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

9. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
10. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
11. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
12. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

11. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
12. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
13. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
14. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
15. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		10 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) चतुर्थ पत्र – 04. हिंदी साहित्य : प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी तक – रचनाएँ व इतिहास

कोड – MJ - 4 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
- प्रगतिशील चेतना का वैचारिक आधार और अभिप्राय स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।
- इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित कर सकेंगे।
- प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझ सकेंगे।
- समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत, सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझ सकेंगे।
- वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार मिलेगा।
- पर्यावरण संबंधी रचनाओं से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।
- आख्यानों की आधुनिकता से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 छायावादोत्तर काव्य परिदृश्य और छायावादोत्तर कविता की भूमिका।

छायावादोत्तर कविता में यथार्थदृष्टि के उदय का स्वरूप – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 छायावादोत्तर काव्य धारा : प्रमुख प्रवृत्तियां : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 छायावादोत्तर काव्य धारा : नई कविता, समकालीन कविता – 01 क्रेडिट

इकाई – 4 अनुशंसित ग्रंथ – काव्य सरगम, सं. संतोष कुमार चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

निर्धारित कविता – हरिवंश राय बच्चन – इंसान और कुत्ते
रामधारी सिंह दिनकर – हिमालय के प्रति
सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' – उठ चल हारिल
गजानन माधव मुक्तिबोध – तुमलोगों से दूर
धर्मवीर भारती – ठण्ढा लोहा
नरेश मेहता – घर की ओर
धूमिल – बीस साल बाद
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – फसल – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएं, गिरिजाकुमार माथुर।
- नयी कविता : स्वरूप एवं समस्याएँ, जगदीश गुप्त।
- समकालीन हिंदी साहित्य : विविध परिदृश्य, रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- आधुनिक हिंदी साहित्य : विविध आयाम, रामचंद्र तिवारी।
- प्रगतिवाद, रामविलास शर्मा।
- प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, रामविलास शर्मा।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ. केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- नागार्जुन के साहित्य में प्रगतिशील चेतना, डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता, क्लासिकल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

प्रमुख (MAJOR) पंचम पत्र – 05. : कहानी व उपन्यास की सैद्धांतिकी

कोड – MJ - 5 अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानव जगत की मानवीयता से परिचित होंगे ।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविकता से परिचित करायेगा ।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा ।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भों और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी ।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई एक– कहानियाँ।

इकाई – 1 आधुनिक हिंदी गद्य का विकास : परिस्थितियाँ एवं पृष्ठभूमि – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 कहानी की परिभाषा, कहानी के तत्व
कहानी की विशेषताएँ, वर्गीकरण
हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 उपन्यास की परिभाषा, उपन्यास के तत्व
उपन्यास की विशेषताएँ, वर्गीकरण – 01 क्रेडिट
हिंदी उपन्यास का उद्‌भव और विकास

इकाई – 4 कथेतर गद्य का उद्‌भव एवं विकास : संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र,
रिपोर्ताज, यात्रावृत्त – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी।
- हिंदी गद्य विन्यास और विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश।
- प्रेमचंद और उनका युग – डॉ. रामविलास शर्मा।
- उपन्यास का शिल्प – डॉ. गोपाल राय।
- हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा – मधुरेश।
- उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – परमानन्द श्रीवास्तव।

लघु पत्र (MINOR) – 02. आधुनिक हिंदी काव्य

कोड – MN – 1B | अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 | समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे ।
- उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 **छायावादी काव्य –** जयशंकर प्रसाद–जाग री,

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–बादल राग,

सुमित्रा नंदन पंत–भारत माता,

महादेवी वर्मा–मधुर–मधुर मेरे दीपक जल – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 **छायावादोत्तर काव्य** – हरिवंश राय बच्चन–अंधेरे का दीपक,

अज्ञेय–मैं वहां हूं,

मुक्तिबोध–भूल–गलती,

नागार्जुन–हटे दनुजदल, मिटे अमंगल – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 रश्मिरथी – 01 क्रेडिट

इकाई – 4 समकालीन प्रमुख कविताएँ –

(क) हार नहीं मानूंगा – अटल बिहारी बाजपेयी

(ख) हिंदी है भारत की बोली', तू चिंगारी बन उड़ री– गोपाल सिंह 'नेपाली

(ग) स्वप्न झरे फूल से – गोपालदास नीरज

(घ) हो गयी है पीर पर्वत सी –दुष्यंत कुमार

(ङ) कोशिश करने वालों की हार नहीं होती – सोहन लाल द्विवेदी – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- मेरी इक्यावन कविताएं–सं. चन्द्रिका प्र.शर्मा, किताबघर
- हिन्दी काव्य यात्रा–सं. सत्य प्रकाश मिश्र,लोकभारती

ए.ई.सी., एम.आई.एल. (ABILITY ENHANCEMENT COURSES, MIL) 02 : सम्प्रेषण कौशल

कोड – AEC – 3 अंक – 50

क्रेडिट – 02 समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- विद्यार्थियों में औपचारिक, अनौपचारिक विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी पत्र के माध्यम से लेखन कला सीख सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – पत्र–लेखन (औपचारिक,अनौपचारिक), ज्ञापन, निबंध, पल्लवन, संक्षेपण – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – लिंग निर्णय, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, अनेक शब्दों के बदले एक शब्द कर्त्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग, वाक्य संशोधन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी व्याकरण – उमेश चंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सरल हिंदी व्याकरण – वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

चतुर्थ समसत्र (Fourth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

13. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
14. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
15. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
16. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

16. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
17. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
18. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
19. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
20. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		10 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) षष्ठ पत्र – 06. हिन्दी नाट्य साहित्य

कोड – MJ - 6 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में संवाद – कला एवं वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- शिक्षण में नाट्य कार्यशाला की अनिवार्यता सुनिश्चित करके भाषा अभिव्यक्ति–कौशल और पटकथा लेखन के ज्ञान का विकास।
- किसी एक नाटक का अनिवार्य मंचन सुनिश्चित करना जिससे विद्यार्थियों का नाट्य स्वरूप से परिचय हो सके । विद्यार्थियों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक ऐक्य का भाव विकसित करना ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – हिंदी नाटक का इतिहास व विकास। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – लोकनाट्य के विविध रूप – रामलीला, रासलीला, बिदेसिया, नुक्कड, भवाई, कठपुतली, छऊ, यात्रा आदि।
लोकरंग परम्पराओं का हिंदी रंगमंच पर प्रभाव,
हिंदी रंगमंच के विभिन्न रूप – शौकिया रंगमंच, व्यावसायिक रंगमंच, सरकारी रंगमंच, रंगशिल्प प्रशिक्षण, रंगस्थापत्य, रंगसज्जा, रंगदीपन, ध्वनि व्यवस्था एवं प्रसाधन, निर्देशन एवं अभिनय। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – **नाटक –** ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – **एकांकी –** दीपदान, चारुमित्रा – रामकुमार वर्मा – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- संक्षिप्त नाट्यशास्त्रम – राधावल्लभ त्रिपाठी।
- हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा।
- हिंदी नाटक कल और आज – डॉ. केदार सिंह, क्लासिकल पब्लिकेशन हाउस।
- रंगमंच : नया परिदृश्य – रीतारानी पालीवाल ।
- एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेंद्र।
- भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच – सीताराम चतुर्वेदी।
- रंगदर्शन – नेमिचंद्र जैन।
- मोहन राकेश का रंगमंच – चन्दन कुमार ।
- आधुनिक नाटक का मसीहा मोहन राकेश – डॉ. राधागोविंद चातक।
- हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी।
- भारतीय नाट्यशास्त्र – बाबू श्यामसुन्दर दास।
- आधुनिक हिंदी नाटक – डॉ. नगेन्द्र।
- भारतीय नाट्य परम्परा – नेमिचंद्र जैन।
- प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
- जयशंकर प्रसाद के नाटकों का अध्ययन – डॉ. राजू राम एवं डॉ. कृष्णा कुमारी, आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

प्रमुख (MAJOR) सप्तम पत्र – 07. सृजनात्मक लेखन

कोड – MJ - 7 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- साहित्य सृजन भी एक कला है। सृजन के विविध स्वरूपों का ज्ञान विद्यार्थियों के लिये जीवनोपयोगी होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – सृजनात्मक लेखन : परिभाषा, स्वरूप
साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र के तत्व
कहानी लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – काव्य लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि
लघुकथा लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – उपन्यास लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – एकांकी/नाटक/प्रहसन आदि लेखन : तत्व एवं लेखन प्रविधि – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- रचनात्मक लेखन, सं. रमेश गौतम
- रचनात्मक लेखन, हरीश अरोड़ा, अनिल कुमार सिंह
- सृजनात्मक लेखन, राजेंद्र मिश्र
- संचार भाषा हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रमुख (MAJOR) अष्ठम पत्र – 08. राष्ट्रीय चेतना और हिंदी रंगमंच

कोड – MJ - 8 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना को जान सकेंगे।
- रंगमंच क्या है और हिंदी रंगमंच की राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में क्या भूमिका रही है, जान सकेंगे।
- इस पाठ से विद्यार्थियों को अपने पूर्वजों के राष्ट्रप्रेम और उनमें निहित राष्ट्रीय चेतना का ज्ञान हो सकेगा।
- विद्यार्थी इस पाठ के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में स्वयं की भूमिका का चयन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- जिनमें सृजनात्मक क्षमता होगी वे नयी रचनाओं यथा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि का निर्माण कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना का अर्थ और अर्थवत्ता, राष्ट्रीयता की अवधारणा भारतीय प्राचीन वाड्.मय और आधुनिक भारतीय और पाश्चात्य साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रीय चेतना संबंधी दृष्टि। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – रंगमंच की अवधारणा – भारतीय एवं पाश्चात्य – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – हिंदी रंगमंच की विकास यात्रा – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – आधुनिक हिंदी रंगमंच पर राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव
(क) भारतेंदु कालीन हिंदी नाटक एवं रंगमंच
(ख) प्रसाद युगीन हिंदी नाटक एवं रंगमंच
(ग) आधुनिक – समकालीन हिंदी नाटक एवं रगंमंच – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- रंगमंच, बलवंत गार्गी
- अंतरंग बहिरंग, देवेन्द्र राज अंकुर
- नाट्य विमर्श, मोहन राकेश
- नाट्य समीक्षा, डॉ0 दशरथ ओझा
- रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन
- रंगमंच और नाटक की भूमिका, डॉ0 लक्ष्मीनारायण
- समकालीन हिंदी रंगमंच और रंगभाषा, डॉ0 आशीष त्रिपाठी

ए.ई.सी., एम.आई.एल. (ABILITY ENHANCEMENT COURSES, MIL) 03 : भाषायी कौशल

कोड – AEC – 3 अंक – 50

क्रेडिट – 02 समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे।
- भाषायी त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, वक्तृता कौशल – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - कारक, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, अनुच्छेद लेखन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

पंचम समसत्र (Fifth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

17. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
18. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
19. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
20. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

21. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
22. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
23. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
24. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
25. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		10 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) नवम पत्र – 09. राष्ट्रीय चेतना की कविता

कोड – MJ - 9 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- हिंदी साहित्य में एक लंबे समय से राष्ट्रीय चेतना की कविता का सृजन होता रहा है। इस गौरवपूर्ण साहित्य का अध्ययन संभव होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – राष्ट्रीय चेतना : परिभाषा और स्वरूप
राष्ट्रीय चेतना की कविता का तात्विक विवेचन – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – राष्ट्रीय चेतना की कविता में देश प्रेम के विविध आयाम – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – हिंदी साहित्य के विविध युगों में राष्ट्रीय चेतना का विकास – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवि : भारतेन्दु हरिश्चंद्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद आदि। – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त, प्रभाकर श्रोत्रिय
- जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र, रामविलास शर्मा
- पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर
- हरिऔध और उनका साहित्य, मुकुंददेव शर्मा
- रामनरेश त्रिपाठी, इंदरराज वैद 'अधीर'
- राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य, वीरभारत तलवार

प्रमुख (MAJOR) दशम पत्र – 10. कथेतर गद्य साहित्य

कोड – MJ - 10 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- हिंदी गद्य के कथा साहित्य से भिन्न अन्य गद्य विधाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विभिन्न हिंदी की कथेत्तर विधाओं के स्वरूप का ज्ञान होगा।
- युगीन संदर्भों के आलोक में कथेत्तर गद्य विधाओं को जान सकेंगे।
- इसके अध्ययन से विद्यार्थी व्यक्तियों, स्थानों, प्रकृति एवं पर्यावरण से परिचित हो सकेंगे।
- गंभीर भावचिंतन, हास्य और मनोरंजन से जुड़कर लाभान्वित होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – निबंध : निबंध की परिभाषा, स्वरूप एवं वैविध्य तथा विकास यात्रा – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – प्रमुख निबंध
ईर्ष्या : रामचन्द्र शुक्ल
नाखून क्यों बढ़ते हैं : हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
मज़दूरी और प्रेम : सरदार पूर्ण सिंह
पगडंडियों का ज़माना : हरिशंकर परसाई
रस आखेटक : कुबेरनाथ राय – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – जीवनी : जीवनी की परिभाषा, स्वरूप एवं वैशिष्टय
आत्मकथा : परिभाषा, स्वरूप एवं वैशिष्टय – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – यात्रावृत्तांत : परिभाषा, स्वरूप एवं वैशिष्टय
संस्मरण : परिभाषा, स्वरूप एवं वैशिष्टय
कथेत्तर गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ : यथा – डायरी, रेखाचित्र,
पत्र साहित्य एवं रिपोर्ताज – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- गद्य की नई विधाओं का विकास, माजदा असद
- गद्य की पहचान, अरूण प्रकाश
- डॉ0 भदन्त आनंद कौशल्यायन जीवन दर्शन, भदन्त सावंगी मेधकर
- हिंदी का गद्य विन्यास और विकास, रामस्वरू चतुर्वेदी
- हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी
- हिंदी गद्य रूप सैद्धांतिक विवेचन, निर्मला देवी श्रीवास्तव
- हिंदी निबंध उद्भव और विकास, हरिचरण शर्मा
- हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य, प्रतापपाल शर्मा

प्रमुख (MAJOR) एकादश पत्र – 11. हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास

कोड – MJ - 11 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- साहित्य की विस्तृत नवीन गद्यविधाओं से विधार्थी परिचित होंगे।
- गद्य की विविध विधाओं का सार्थक ज्ञान प्राप्त होगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से युगीन विभिन्न चुनौतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से युगीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेशो का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
- गद्य साहित्य के माध्यम से आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक स्थितियों का बोध होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – हिंदी कथा साहित्य का विकास : भारतेंदु से अद्यतन। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – हिंदी नाटक का विकास : भारतेंदु से अद्यतन। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – हिंदी निबंध साहित्य का विकास : भारतेंदु से अद्यतन। – 01 क्रेडिट

इकाई 4 – हिंदी की कथेतर विधाओं का विकास : आलोचना, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत एवं रिपोर्ताज – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य का इतिहास – संनगेन्द्र
- हिंदी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिंदी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
- हिंदी गद्य : विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- आधुनिक साहित्य – नंद दुलारे वाजपेयी
- भारतेंदु और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ – राम विलास शर्मा
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपति चंद्र गुप्त

लघु पत्र (MINOR) – 03. राजभाषा व प्रयोजनमूलक हिंदी

कोड – MN – 1C | अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 | समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बांधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे ।
- विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा ।
- हिंदी के अर्थ–विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास । – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 हिंदी की बोलियाँ – पूर्वी और पश्चिमी हिंदी । – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा के रूप में हिंदी । – 01 क्रेडिट

इकाई – 4 प्रयोजनमूलक हिंदी, पारिभाषिक शब्दावली, अनुवाद प्रक्रिया । – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :–

- हिंदी भाषा, डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी : उद्‌भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास – उदय नारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का इतिहास – भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान, देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडेय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी, राहुल सांकृत्यायन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

लघु शोध (DISSERTATION) – हिंदी भाषा एवं साहित्य

कोड – IAP अंक – 100

क्रेडिट – 04

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- साहित्य अध्ययन अभिरूचि एवं गहनता की दृष्टि विकसित होगी।
- साहित्य में वर्णित सूक्ष्म भावों से अवगत हो सकेंगे।
- साहित्य और समाज के सहसंबंधों की परख होगी।
- शोध दृष्टि का विस्तार होगा।
- शोध की प्रविधि से परिचित हो सकेंगे।
- शोध के विविध आयामों से जुड़ाव महसूस सकेंगे।
- विभाग, निर्देशक एवं शोधप्रज्ञ के बीच समन्वय बोध।
- लघु शोध हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित युगों, साहित्यकारों, रचनाओं एवं लोक साहित्य से संबंधित होगा।
- लघु शोध प्रबंध/परियोजना कार्य लेखन विभागीय शिक्षक/शिक्षकों के मार्गदर्शन या पर्यवेक्षण में संपन्न किये जाएँगे।
- मूल्यांकन कार्य में बतौर आंतरिक परीक्षक संबंधित महाविद्यालय के विभागीय शिक्षक एवं बतौर बाह्य परीक्षक अतंर महाविद्यालय/अंतर विश्वविद्यालय बाह्य विशेषज्ञ की उपस्थिति आवश्यक होगी।

षष्ठ समसत्र (Sixth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

21. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
22. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
23. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
24. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'ख'	–	03 X 15 = 45 अंक
कुल	–	50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

26. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
27. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
28. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
29. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
30. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय)	–	02 X 05 = 10 अंक
खंड 'ख'	–	04 X 15 = 60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा	–	15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति	–	10 अंक
	कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) द्वादश पत्र – 12. हिंदी आलोचना

कोड – MJ - 12 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक विवेक/समीक्षात्मक दृष्टि का विकास होगा।
- भारतीय प्रतिश्रुति से उनका परिचय हो सकेगा।
- विद्यार्थियो में भाषा–शिक्षण के संस्कारों का विकास होगा।
- हिंदी आलोचकों के परिचय के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मक भाव का विकास एवं राष्ट्रीय हिंदी की स्वीकार्यता को संबल प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1	आलोचना : परिभाषा, स्वरूप, प्रकार एवं विशेषताएँ	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2	हिंदी आलोचना : परंपरा, विकास एवं स्थिति	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3	हिंदी के प्रमुख आलोचक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नंद दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3	हिंदी के प्रमुख आलोचक – डॉ0 नगेंद्र, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, रामस्वरूप चतुर्वेदी	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- चिन्तामणि भाग – 1 – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध भूमिकाएँ – संपादन – कृष्णदत्त पालीवाल
- आस्था के चरण – डॉ0 नगेंद्र
- हिंदी जाति का साहित्य – रामविलास शर्मा
- हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता – डॉ0 कृष्णगोपाल
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – डॉ0 रामविलास शर्मा
- हिंदी गद्य, विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
- हिंदी आलोचना : कल और आज,पुस्तक भवन, नई दिल्ली – डॉ0 केदार सिंह

प्रमुख (MAJOR) त्रयोदश पत्र – 13. मीडिया के विविध आयाम

कोड – MJ - 13 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- मीडिया के विविध रूपों से परिचित होने पर छात्र मीडिया के क्षेत्र में रोज़गार के नये अवसर तलाश सकेंगे।
- मीडिया लेखन के विविध आयाम छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने की अवसर प्रदान करेंगे।
- विज्ञापन लेखन छात्रों को विज्ञापन की संदेश रचना में दक्षकर विज्ञापन एजेंसियों में छात्रों के रोज़गार की संभावनाओं को बढ़ायेगा।
- मीडिया की भाषा के विविधरूपों की समझ छात्रों को भाषा की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित करायेगी।
- न्यूमीडिया की सही समझ छात्रों को समाज के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करने की दिशा में प्रवृत्त कर सकेंगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 मीडिया के विकास के चरण

- पारंपरिक एवं आधुनिक जनमाध्यम
- स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनता के बाद का मीडिया
- मीडिया के विविध रूप और उनकी उपयोगिता –
  (क) प्रिंट मीडिया
  (ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – टेलीविजन, रेडियो और फिल्में – 01 क्रेडिट

इकाई – 2 सोशल मीडिया

- सोशल मीडिया से अभिप्राय
- सोशल मीडिया के विविध रूप
- सोशल मीडिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव, छ्दभ समाचार (फेक न्यूज) – 01 क्रेडिट

इकाई – 3 मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयाम एवं भाषा

- समाचार लेखन
- संपादकीय लेखन
- स्तंभ लेखन
- फीचर लेखन
- समाचार पत्रों की भाषा
- टेलीविजन की भाषा
- रेडियो की भाषा
  सोशल मीडिया की भाषा – 01 क्रेडिट

इकाई – 4 विज्ञापन : अवधारणा और स्वरूप

- विज्ञापन का उद्देश्य और महत्व
- विज्ञापन लेखन के विविध पक्ष एवं आयाम – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- विज्ञापन माध्यम एवं प्रचार – डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ/प्रतुलअथइया
- जनसंचार माध्यम : विविध आयाम – बृज मोहन गुप्त
- जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास – देवेन्द्र इस्सर
- हिंदी पत्रकारिता : कल आज और कल – सं0 सुरेश गौतम
- मीडिया की भाषा – डॉ0 वसुधा गाडगिल
- टेलीविजन की दुनिया – प्रभु झिंगरन
- पत्र संपादन कला – नन्द किशोर त्रिखा

प्रमुख (MAJOR) चतुर्दश पत्र – 14. प्रयोजन मूलक हिंदी

कोड – MJ - 14 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- प्रयोजन मूलक हिंदी की उपयोगी जानकारी प्राप्त कर छात्र रोजगार के सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रों के लिए हिंदी के प्रयोग में दीक्षित हो सकेंगे।
- हिंदी भाषा और उस के विविध प्रयोगों की जानकारी प्राप्त कर छात्र राजभाषा हिंदी के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से छात्र प्रयोजन मूलक हिंदी के वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे।
- छात्र कामकाज से संबंधित पत्र लेखन में सक्षम हो सकेंगे।
- विज्ञापन लेखन का कौशल प्राप्त कर छात्र विज्ञापन एजेंसियों में रोज़गार पा सकेंगे।
- छात्रों में अनुवाद कार्य की समझ और अनुवाद कार्य करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- छात्रों में भाषा का मौखिक और लिखित कौशल का संवर्धन हो सकेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा और संभावनाएँ
   - प्रयोजनमूलक हिंदी से अभिप्राय व विशेषताएँ
   - प्रयोजनमूलक हिंदी और साहित्यिक हिंदी में अंतर
   - रोजगार के क्षेत्र में प्रयोजन मूलक हिंदी की संभावनाएँ
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्ति और क्षेत्र
   - कार्यालयी हिंदी
   - तकनीकी हिंदी
   - व्यावसायिक हिंदी
   - संचार माध्यम की हिंदी – 01 क्रेडिट

इकाई – 2

3. कम्प्यूटर की हिंदी
4. पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ और स्वरूप
   - 100 पारिभाषिक शब्द – 01 क्रेडिट

इकाई – 3

5. पत्र लेखन
   - सरकारी पत्र लेखन
   - अर्ध सरकारी पत्र लेखन
   - व्यावसायिक पत्र लेखन

6. जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन

- जनसंचार की परिभाषा
- विज्ञापन की परिभाषा
- विज्ञापन लेखन के तत्व
- समाचार की परिभाषा
- उद्घोषणा लेखन – 01 क्रेडिट

इकाई – 4

7. अनुवाद

- प्रयोजन मूलक हिंदी के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व
- अनुवाद के प्रकार
- कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजन मूलक कामकाजी हिंदी – डॉ0 कैलाशचंद्र भाटिया
- अनुवाद कला – डॉ0 एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- प्रयोजन मूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – डॉ0 रमेशचन्द्र त्रिपाठी
- प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ0 कैलाशचंद्र भाटिया
- प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ0 राजेन्द्र मिश्र/राकेश शर्मा
- भाषा के विविध रूप और अनुवाद – प्रो0 कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजन मूलक हिंदी – डॉ0 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

प्रमुख (MAJOR) पंचदश पत्र – 15. कहानी

कोड – MJ - 15 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाओं से परिचित होंगे ।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन और जगत की वास्तविकताओं से परिचित करायेगा ।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा ।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भों और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी ।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - कहानी – विशेषता, तत्व और भेद, हिंदी के विभिन्न कहानी आंदोलन – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - बंग महिला (राजेंद्र बाला घोष) – दुलाई वाली
राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह – कानों में कंगना
माधव राव सप्रे – एक टोकरी भर मिट्टी – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - चंद्रधर शर्मा गुलेरी – उसने कहा था
प्रेमचंद – दुनिया का सबसे अनमोल रतन
जयशंकर प्रसाद – आकाशदीप – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - रेणु – संवदिया
मोहन राकेश – मलबे का मालिक
उदय प्रकाश – तिरिछ – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- कथा मंजरी – पुष्पपाल सिंह, ज्ञानदूत, दिल्ली
- हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- मोहन राकेश : व्यक्तिव एवं कृतित्व, डॉ. सुनील कुमार दुबे एवं डॉ. राजू राम, आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

सप्तम समसत्र (Seventh Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

25. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
26. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
27. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
28. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'ख'	–	03 X 15 = 45 अंक
कुल	–	50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

31. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
32. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
33. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
34. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
35. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –		05 X 01 = 05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय)	–	02 X 05 = 10 अंक
खंड 'ख'	–	04 X 15 = 60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा	–	15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति	–	10 अंक
	कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

प्रमुख (MAJOR) षोड़श पत्र – 16. उपन्यास

कोड – MJ - 16 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाओं से परिचित होंगे ।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन और जगत की वास्तविकताओं से परिचित करायेगा ।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा ।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भों और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी ।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - उपन्यास : स्वरूप, विशेषता, तत्व और भेद – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - रेणु – कितने चौराहे – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - मन्नू भंडारी – आपका बंटी – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - कृष्णा सोबती – ऐ लड़की – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रमुख (MAJOR) सप्तदश पत्र – 17. भारतीय काव्यशास्त्र

कोड – MJ - 17 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा से परिचित हो सकेंगे ।
- काव्य के महत्वपूर्ण उपादानों से परिचित हो सकेंगे ।
- काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों की जानकारी होने पर विद्यार्थियों में काव्य का शास्त्रीय ज्ञान विकसित हो सकेगा ।
- विद्यार्थी साहित्य सृजन के मूलाधार, सृजन की केंद्रीय चेतना और उसके विभिन्न प्रयोजनों को समझ सकेंगे
- उनमें साहित्य सृजन की अभिरुचि पैदा हो सकेगी ।
- विद्यार्थी कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा का सामान्य परिचय।
काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय ।
रस सिद्धांत : रस का स्वरूप और भेद, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि के भेद। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - अलंकार सिद्धांत : परिभाषा, लक्षण, अलंकार के भेद।
रीति सिद्धांत : रीति का अर्थ, रीति के भेद। – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद ।
औचित्य सिद्धांत : औचित्य की अवधारणा, औचित्य के भेद। – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र।
- रस सिद्धांत – स्वरुप विश्लेषण – डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित ।
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव शर्मा।
- भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. उदयभानु सिंह।
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव झारी।
- भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी।
- रस मीमांसा – आ. रामचंद्र शुक्ल।
- काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र।
- भारतीय काव्यशास्त्र : सुबोध विवेचन – सत्यदेव चौधरी।

प्रमुख (MAJOR) अष्टादश पत्र – 18. पाश्चात्य काव्य शास्त्र

कोड – MJ - 18 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य चिंतन की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थियों में आलोचना दृष्टि विकसित होगी।
- वे भारतीय और पाश्चात्य आलोचना दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचना कर सकेंगे।
- उन्हें आलोचना की नयी प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- उनमें साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - प्लेटो : काव्य संबंधी अवधारणाएं।

अरस्तू : अनुकरण संबंधी अवधारणा, विरेचन एवं त्रासदी संबंधी सिद्धांत। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - लोंजाइनस : उदात्त सिद्धांत।

वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत।
कॉलरिज : काव्य संबंधी अवधारणा, कल्पना और फैंटेसी । – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - क्रोचे : अभिव्यंजनावाद।

टी.एस. इलियट : परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सह सम्बन्ध। – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - आई.ए.रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत।

वाद और सिद्धांत : आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद।
कल्पना, बिम्ब,फैंटेसी। – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. बच्चन सिंह।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्र नाथ शर्मा।
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – इतिहास, सिद्धांत और वाद – डॉ. भगीरथ मिश्र।

प्रमुख (MAJOR) नवदश पत्र – 19. हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान

कोड – MJ - 19 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बांधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे ।
- विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा ।
- हिंदी के अर्थ–विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - भाषा : परिभाषा, स्वरुप उत्पत्ति और विशेषताएँ,
भाषा विज्ञान : परिभाषा, अन्य ज्ञान – अनुशासनों से संबंध
भाषा और बोली।
हिंदी भाषा की विविध बोलियाँ। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - ध्वनि विज्ञान : परिभाषा, हिंदी स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - शब्द विाान : परिभाषा और स्रोत के आधार पर वर्गीकरण।
वाक्य विाान : परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व और संरचना के आधार पर वर्गीकरण।
– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - अर्थ विज्ञान : परिभाषा और अर्थ–विकास (परिवर्तन) की दिशाएँ एवं कारण।
नागरी लिपि का वर्तमान स्वरूप और वैज्ञानिकता, हिंदी का मानकीकरण। – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी ।
- भाषा विज्ञान की भूमिका, आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा।
- हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी।
- भाषा और समाज, डॉ. रामविलास शर्मा।

लघु पत्र (MINOR) – 04. : कार्यालयी हिन्दी

कोड – MN-1D | अंक – 50 (बाह्य – 40, आंतरिक – 10)

क्रेडिट – 04 | समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छात्र कार्यालयी हिंदी के स्वरूप से परिचित होकर कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे ।
- ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान उनके हिंदी कौशल संवर्धन में सहायक होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 -	कार्यालयी हिंदी का स्वरूप	– 01 क्रेडिट
इकाई 2 -	कार्यालयी हिंदी का क्षेत्र	– 01 क्रेडिट
इकाई 3 -	कार्यालयी पत्राचार के विविध रूप कार्यालयी हिंदी की समस्याएँ	– 01 क्रेडिट
इकाई 4 -	कार्यालयी हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजनमूलक हिंदी – माधव सोनटक्के
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय
- प्रशासनिक हिंदी – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी – दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

अष्टम समसत्र (Eighth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

29. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
30. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
31. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
32. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक– 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

36. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
37. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
38. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
39. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
40. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		15 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		10 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

लघु शोध (DISSERTATION) – हिंदी भाषा एवं साहित्य

कोड – RC अंक – 300

क्रेडिट – 12

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- साहित्य अध्ययन अभिरूचि एवं गहनता की दृष्टि विकसित होगी।
- साहित्य में वर्णित सूक्ष्म भावों से अवगत हो सकेंगे।
- साहित्य और समाज के सहसंबंधों की परख होगी।
- शोध दृष्टि का विस्तार होगा।
- शोध की प्रविधि से परिचित हो सकेंगे।
- शोध के विविध आयामों से जुड़ाव महसूस सकेंगे।
- विभाग, निर्देशक एवं शोधप्रज्ञ के बीच समन्वय बोध।
- लघु शोध हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित युगों, साहित्यकारों, रचनाओं एवं लोक साहित्य से संबंधित होगा।
- लघु शोध प्रबंध/परियोजना कार्य लेखन विभागीय शिक्षक/शिक्षकों के मार्गदर्शन या पर्यवेक्षण में संपन्न किये जाएँगे।
- मूल्यांकन कार्य में बतौर आंतरिक परीक्षक संबंधित महाविद्यालय के विभागीय शिक्षक एवं बतौर बाह्य परीक्षक अतंर महाविद्यालय/अंतर विश्वविद्यालय बाह्य विशेषज्ञ की उपस्थिति आवश्यक होगी।

प्रमुख (MAJOR) विंशति पत्र– 20. पर्यटन एवं साहित्य

कोड – MJ - 20 अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी पर्यटन के बारे में जान सकेंगे।
- ऐतिहासिक–सांस्कृतिक और प्राचीनतम शिक्षण संस्थाओं के बारे में जान सकेंगे।
- प्राचीन एवं अर्वाचीन वाणिज्यिक और व्यावसायिक केंद्रों के बारे में जान सकेंगे।
- समुद्री क्षेत्र, प्रसिद्ध नदियों, राष्ट्रीय महत्व के उद्यानों, वैज्ञानिक संस्थानों के बारे में जान सकेंगे।
- महान साहित्यकारों के जन्म स्थलों, कर्मस्थलों आदि के बारे में जान सकेंगे।
- प्राप्त ज्ञान का उपयोग आजीविका की दृष्टि से कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - पर्यटन का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप। – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - भारत में पर्यटन के महत्वपूर्ण स्थल। – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - पर्यटन में चिह्नित साहित्यिक स्थल जो भारतीय एवं विशेषरूप से हिंदी साहित्य के निर्माताओं के कार्यस्थल रहे हैं। – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - पर्यटन की दृष्टि से प्रकाशित प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ आदि। – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- यात्रा साहित्य विद्या : शास्त्र और इतिहास, बापू राव देसाई।
- पर्यटन सिद्धांत और प्रबंधन : शिवस्वरूप सहाय।
- भारत में पर्यटन : राजेश कुमार व्यास।

किसी एक समूह का अध्ययन अपेक्षित है –

कोड – AMJ - 1 (ग्रुप – A) (ग्रुप – B) अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में संवाद –कला एवं वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- शिक्षण में नाट्य कार्यशाला की अनिवार्यता सुनिश्चित करके भाषा अभिव्यक्ति–कौशल, रंगमंच–व्यवस्था और पटकथा लेखन के ज्ञान का विकास।
- किसी एक नाटक एवं एक एकांकी का अनिवार्य मंचन सुनिश्चित करना जिससे विद्यार्थियों का नाट्य स्वरूप से परिचय हो सके । विद्यार्थियों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक ऐक्य का भाव विकसित करना ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

ग्रुप – 'A' **नाटक**

इकाई 1 - नाटक – तत्त्व, महत्व और भेद
हिंदी रंगमंच : स्वरूप और विकास – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - जगदीश चंद्र माथुर – कोणार्क – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - मोहन राकेश – आधे अधूरे – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - हरिकृष्ण प्रेमी – रक्षा बंधन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तोगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी नाटक का आत्म संघर्ष, गिरीश रस्तोगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- मोहन राकेश : मूल्य और चिंतन, डॉ0 सुनील कुमार दुबे, आयुष्मान, नई दिल्ली

अथवा

ग्रुप – 'B' **एकांकी**

इकाई 1 - एकांकी – परिभाषा, तत्व एवं विशेषता, रेडियो नाटक – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - उदयशंकर भट्ट – पर्दे के पीछे – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - विष्णु प्रभाकर – माँ – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - लक्ष्मी नारायण लाल – कालपुरुष और अजंता की नर्तकी – 01 क्रेडिट
(सात श्रेष्ठ एकांकी – सं०–गंगा प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

उन्नत (ADVANCE) प्रमुख द्वितीय पत्र– 02. सूरदास अथवा तुलसीदास

किसी एक समूह का अध्ययन अपेक्षित है –

कोड – AMJ - 2 **(ग्रुप – A) (ग्रुप – B)** अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- सूर साहित्य के माध्यम से भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति का बोध हो सकेगा।
- तुलसी साहित्य के माध्यम से भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति का बोध हो सकेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

ग्रुप – 'A' **सूरदास**

इकाई 1 - सूरदास : जीवन और दर्शन – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - सूरदास : रचना संसार (रचना वैशिष्ट्य) – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - गोकुललीला (बाल लीला) – आरंभ के 10 पद – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - भ्रमरगीत – आरंभ के 10 पद – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- सूरदास – सं० रामचन्द्र शुक्ल, ना०प्र०स०, काशी
- सूरसागर सार – सं. धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा.लि., प्रयागराज
- भ्रमरगीतसार – सं. रामचंद्र शुक्ल, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
- सूरदास – हरबंसलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अथवा

ग्रुप – 'B' **तुलसीदास**

इकाई 1 - तुलसीदास : जीवन और दर्शन – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - तुलसीदासः रचना संसार (रचना वैशिष्ट्य) – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - रामचरितमानस – पुष्प वाटिका प्रसंग – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - कवितावली – आरंभ से 5 पद – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- रामचरितमानस – गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर
- कवितावली – गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर
- तुलसी काव्य मीमांसा – उदय भानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

उन्नत (ADVANCE) प्रमुख तृतीय पत्र– 03. राष्ट्रभाषा अथवा कामकाजी हिंदी

किसी एक समूह का अध्ययन अपेक्षित है –

कोड – AMJ - 3 **(ग्रुप – A) (ग्रुप – B)** अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान होगा ।
- हिंदी के अर्थ–विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा ।
- हिन्दी की प्रयोजनीयता से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

ग्रुप – 'A' **राष्ट्रभाषा हिंदी**

इकाई 1 - राष्ट्रभाषा संपर्कभाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी, वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएँ एवं सीमाँए – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - संचार माध्यम और हिंदी, तकनीकी विकास और हिंदी – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - देवनागरी लिपि : उद्‌भव–विकास, गुण–दोष – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और मानकीकरण – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- राजभाषा हिंदी, कैलाश चंद भाटिया, वाणी प्रकाशन

अथवा

ग्रुप – 'B' **कामकाजी हिंदी**

इकाई 1 - प्रयोजनमूलक हिंदी : अभिप्राय, क्षेत्र, शैलियाँ और परिस्तिथियां – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - सामान्य हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर – 01 क्रेडिट

इकाई 3 - प्रयोजनमूलक हिंदी : टिप्पणी और पत्र लेखन – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - पारिभाषिक शब्दवाली : अभिप्राय, निर्माण की प्रक्रिया और समस्या एवं समाधान – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक हिंदी, दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी, राहुल सांकृत्यायन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली